सिटी इवेंट

धनतेरस पर बरसेगी लक्ष्मी

एक साथ पांच शुभ योग

प्रदोषकाल में खरीददारी करना रहेगा श्रेष्ठ

महानगर संवाददाता

जयपुर। दीपावली से पहले धनतेरस यों तो स्वयं में अबूझ मुहूर्त वाला दिन माना जाता है, पर इस बार इस दिन पांच शुभ योगों का संयोग सोने में सुहागा की तरह रहेगा। ये योग 19 साल बाद एक साथ रहेंगे। इनमें पहला योग चंद्रमा और मंगल की कन्या राशि में युति रहने पर लक्ष्मी योग निर्मित होगा। दूसरा योग सूर्य और बुध के भी इसी राशि में रहने से बुधादित्य योग रहेगा। तीसरा योग इसी दिन रात में सूर्य के राशि परिवर्तन करने से तुला संक्रांति योग रहेगा। चौथा योग इस दिन सूर्योदय से सर्वार्थ सिद्धी योग तथा पांचवां शाम को प्रदोष रहेगा।

धनतेरस का पूरा दिन सूर्योदय से देर रात तक मंगलकारी रहेगा। इन योगों में किए गए शुभ कार्य और खरीद-फरोख्त लाभदायी और समृद्धकारी रहेगी। शाम के वक्त प्रदोष काल में बर्तन, ज्वैलरी, सोने-चांदी की गणेशजी और लक्ष्मी प्रतिमा, इलेक्ट्रॉनिक्स सामान की खरीदारी के लिए यह खास दिन है। इस दिन बही-खाता, सहित वाणिज्य से जुड़े कार्य करना भी श्रेष्ठ फलदायक होता है। इससे पूर्व 13 अक्टूबर को सुबह 7.45 से पुष्य नक्षत्र योग प्रारंभ होगा, जो अगले दिन 14 को सुबह 6.54 बजे तक रहेगा। इस दिन बुध और सूर्य के साथ रहने से बुधादित्य योग बनेगा। शुक्रवार को द्विपुष्य नक्षत्र की शुरुआत होगी, जो शनिवार को सूर्योदय के बाद तक रहेगा। शुक्र और शनि पुष्य योग खरीदारी के लिए उत्तम माना जाता है।

होगी धनवंतरि की पूजा

धनतेरस पर भगवान धनवंतरि की पूजा की जाएगी।

आयुर्वेदिक औषधालयों में आरोग्य के देवता का पूजन कर स्वास्थ्य की कामना की जाएगी। इस दिन तैयार की गई औषधियां अमृत के समान कार्य करती हैं।

इनका कहना है...

धन के देवता भगवान कुबेर का प्राकट्य प्रदोष काल में होने का शास्त्रों में उल्लेख है। धनतेरस पर मंगलवार और प्रदोष का होना अति शुभ है। इस दिन नए व्यापारिक अनुबंध और खरीदारी समृद्धदायी रहेगी।

पं. सुरेन्द्र गौड़
निदेशक ऋषिराज ज्योतिष एवं अनुसंधान केन्द्र

मुरली मनोहर मंदिर में महायज्ञ आठ नवम्बर से

महानगर संवाददाता

जयपुर। गंगापोल स्थित मुरली मनोहर मंदिर में स्थापित रामक्रतु स्तंभ की स्वर्ण जयंती और रामानुजाचार्य की सहस्त्राब्दी के उपलक्ष्य में 8 से 17 नवम्बर तक महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। यज्ञशाला का भूमि पूजन कर आयोजन की तैयारियां तेज हो गई है। महंत स्वामी राघवेंद्राचार्य ने बताया कि भूमि पूजन कार्यक्रम राजस्थान सार्वजनिक प्रंन्यास मंडल के सभापति एसडी शर्मा और कोलकाता के झालरिया मठ डीडवाना के समाजसेवी राजकुमार बजाज ने किया। दशहरा के दिन मंदिर में स्थापित रामक्रतु स्तंभ और यज्ञशाला का पूजन किया जा चुका है। रामक्रतु स्तंभ प्रदेश में दो ही जगह हैं। पहला गुलाबी नगर में और दूसरा पुष्कर में है। स्तंभ पर भक्तों द्वारा सामूहिक हस्तलिखित 1.15 करोड़ श्रीराम नाम हैं। चतुर्दिक शिला फलकों पर मूल वाल्मीकि रामायण के श्लोक लिखे हैं।

अहोई अष्टमी आज, संतान की खुशहाली के लिए मां रखेंगी व्रत

महानगर संवाददाता

जयपुर। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवा चौथ का व्रत रखकर पति की लम्बी उम्र की कामना करने वाली पत्नियां अब गुरुवार को संतान की खुशहाली की कामना के साथ अहोई अष्टमी का व्रत करेंगी। वहीं नि: संतान महिलाएं संतान प्राप्ति के लिए व्रत रख पूजा-अर्चना करेंगी। पं. राजकुमार चतुर्वेदी ने बताया कि अहोई अष्टमी पर संतान की रक्षा और संतान प्राप्ति के लिए अहोई माता की पूजा-अर्चना करने की मान्यता है। इस दिन महिलाएं सूर्यास्त के समय घर की दीवार पर माता के प्रतिरूप स्वरूप आठ कोणों वाली पुतली और स्याहू माता तथा उसके बच्चों की आकृति बनाती है। आजकल बाजारों में भी अहोई माता की फोटो उपलब्ध है। विधि-विधान से पूजा कर महिलाएं चंपा-चमेली की कथा सुनेंगी। बड़ी उम्र की महिलाओं के चरण छूकर आशीर्वाद लेंगी।

विधि-विधान से पूजा कर महिलाएं चंपा चमेली की कथा सुनेंगी

गोविंददेवजी मंदिर में 151 कुंडीय महालक्ष्मी यज्ञ 17 को

महानगर संवाददाता

जयपुर। मां भगवती जमवाय फाउंडेशन ट्रस्ट एवं सर्व ब्राह्मण महासभा के संयुक्त तत्वावधान में गोविंददेवजी मंदिर में 17 अक्टूबर को 151 कुंडीय श्रीमहालक्ष्मी यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर स्फटिक श्रीयंत्र अर्चन का पूजन भी किया जाएगा। ट्रस्ट के अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य पं. पवन शास्त्री ने बताया कि महायज्ञ में अयोध्या से रामानुजाचार्य वासुदेवाचार्य विद्या भास्कर स्वामी, गलतापीठाधीश्वर अवधेशाचार्य, गोविंददेवजी मंदिर के महंत अंजन कुमार गोस्वामी, महामंडलेश्वर पुरुषोत्तम भारती, सहित अनेक संतों-महंतों का सान्निध्य प्राप्त होगा।

ब्राह्मण समाज का परिचय सम्मेलन दो दिसम्बर को

महानगर संवाददाता

जयपुर। राजस्थान ब्राह्मण समाज के महिला प्रकोष्ठ की ओर से दो दिसम्बर को अंबाबाड़ी दुर्गा माता मंदिर के सामने स्थित हनुमान पार्क में परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। प्रदेशाध्यक्ष अंबिका प्रकाश पाठक की अध्यक्षता में प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में आयोजन को लेकर कार्यकारिणी गठित की गई। डॉ. शारदा शर्मा को संयोजिका और सुषमा पारीक को उप संयोजिका मनोनीत किया गया है। सामूहिक विवाह सम्मेलन की प्रदेश कार्यकारिणी में अंबिकाप्रकाश पाठक को अध्यक्ष, ओमप्रकाश जोशी को प्रचार-प्रसार मंत्री, दामोदरप्रसाद शर्मा को महामंत्री, गोवर्धनलाल शर्मा को कोषाध्यक्ष, जमुनालाल शर्मा को संगठन मंत्री, राकेश शर्मा को जयपुर संभाग अध्यक्ष, विजय भारद्वाज को युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष, गोपाल भारद्वाज चेतावाला को जयपुर ग्रामीण अध्यक्ष, विपिनबिहारी तिवाड़ी को जयपुर शहर उपाध्यक्ष, मोहनलाल शर्मा को सांगानेर तहसील अध्यक्ष, अशोक शर्मा और दिनेश शर्मा और अशोक शर्मा को जयपुर ग्रामीण युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष, गोपाल भारद्वाज को प्रवक्ता, डॉ. शारदा शर्मा को महिला प्रकोष्ठ प्रदेशाध्यक्ष, किरण पुरोहित को महिला प्रदेश उपाध्यक्ष, रामावतार शर्मा को प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य, भुवनेश तिवाड़ी को चौमूं ग्रामीण तहसील अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

आस्था पर चोट-मनमाने फैसलों से लग रहा धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात

गोविंददेवजी मंदिर का फरमान-करो एक ही परिक्रमा

महानगर संवाददाता

■ और प्रदक्षिणा करनी है तो लगाओ मुख्य द्वार का चक्कर ■ जगमोहन से बंद की तुलसी-चरणामृत की व्यवस्था ■ दर्शनार्थियों-सेवकों में आ रही कहासुनी की नौबत

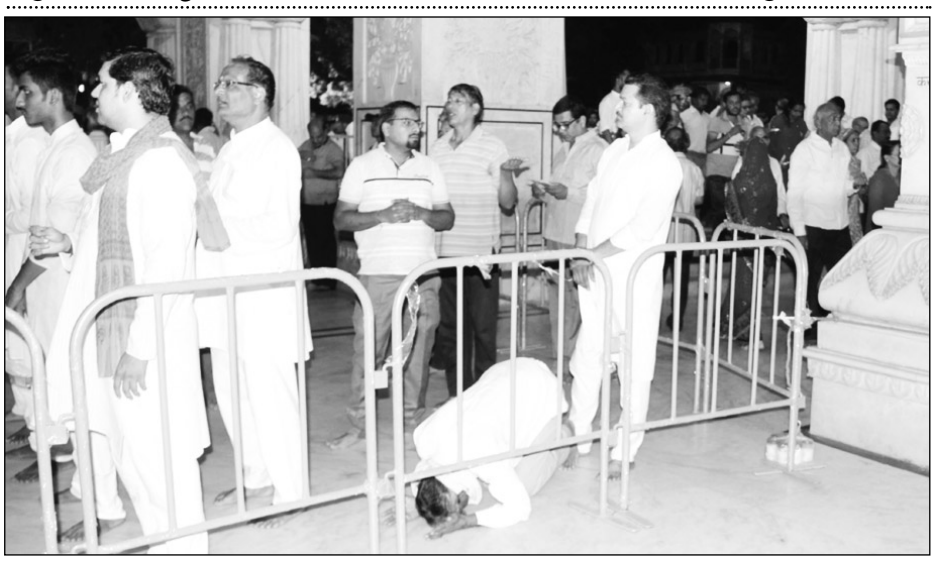

जयपुर। पर्व पुंज कार्तिक माह में शहर के आराध्य देव गोविंददेवजी की मंगला झांकी के दर्शन कर परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं की आस्था पर मंदिर की व्यवस्था देखने वाले गोस्वामी परिवार की मनमानी भारी पड़ रही है। गोस्वामी परिवार ने बिना प्रशासन की स्वीकृति लिए नए नियम थोप दिए हैं जो दर्शनार्थियों के लिए मुश्किल खड़ी कर रहे हैं। मंगला झांकी में दर्शन करने के बाद ठाकुरजी की अब केवल एक परिक्रमा करने की इजाजत है। मंदिर परिक्रमा मार्ग से जगमोहन की ओर जाने वाले मार्ग में बेरिकेटिंग लगा दी गई है, जिससे श्रद्धालु दूसरी परिक्रमा करने के बाद जगमोहन में नहीं जा सकते। यदि और परिक्रमा करनी है तो दर्शनार्थी को लम्बा चक्कर काटना होगा। उन्हें मंदिर कार्यालय के सामने से मुख्य द्वार होते हुए जगमोहन के बाहर से दुबारा अंदर आना होगा। इस नई व्यवस्था से श्रद्धालुओं की आस्था को चोट लग रही है। कई दशकों से मंदिर में मंगला झांकी में परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं और मंदिर प्रशासन के सेवकों में कहासुनी भी हो रही है। उल्लेखनीय है कि गोविंददेवजी मंदिर की वेबसाइट पर मंदिर प्रशासन ने स्वयं लिख रखा है कि गणेशजी की तीन, गोविंददेव जी की चार, शिवजी की आधी, देवी जी की एक और सूर्य देव की सात परिक्रमा करनी चाहिए। लेकिन अब मंदिर प्रशासन गोविंददेवजी की एक ही परिक्रमा कराने पर क्यों तुला हुआ है, इसको लेकर लोग अचरज में हैं।

तुलसी-चरणामृत के लिए भी बाहर का रास्ता

मंदिर प्रशासन ने तीन सदी से जगमोहन के परिक्रमा मार्ग में तुलसी और चरणामृत देने की व्यवस्था भी हटाकर

मुख्य द्वार पर कर दी गई है। अब ठाकुरजी के दर्शन कर चरणामृत और तुलसी लेने के लिए श्रद्धालुओं को मुख्य द्वार पर जाना पड़ रहा है। कई लोगों को नई व्यवस्था के बारे में जानकारी नहीं है, इसलिए वे बिना चरणामृत और तुलसी के ही जा रहे हैं।

भीड़ नियंत्रण के लिए उठाया कदम : उधर मंदिर प्रशासन का कहना है कि कार्तिक माह में मंगला झांकी में श्रद्धालुओं की भारी संख्या रहती है। भीड़ को नियंत्रित रखने के लिए यह कदम उठाया गया है। जिन्हें और परिक्रमा करनी है वह चक्कर काट कर परिक्रमा कर सकता है। जगमोहन से परिक्रमा करने की व्यवस्था ही बंद की गई है। कुछ भी हो कार्तिक माह में गोविंददेवजी के दर्शन कर चार परिक्रमा करने वाले बड़ी उम्र के हजारों श्रद्धालुओं को मंदिर प्रशासन की नई व्यवस्था ने परेशानी में डाल दिया है।

भेंट में जमा नहीं होंगे आभूषण-बर्तन

ठिकाना मंदिर श्री गोविंद देवजी और इसके अधीन मातहत मंदिरों में अब किसी भी प्रकार के बहुमूल्य जेवरात, सोने-चांदी के छत्र,

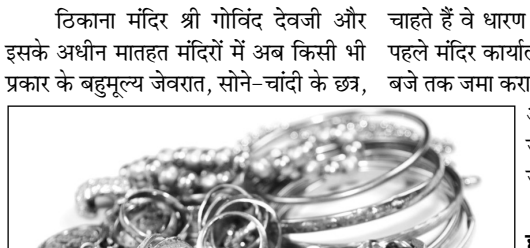

बांसुरी, पायजेब आदि भेंट में जमा नहीं किए जाएंगे। इनके अलावा बर्तन आदि भी जमा नहीं किए जाएंगे। मंदिर प्रशासन ने इस आशय की जानकारी सूचना पट्ट और मंदिर की वेबसाइट पर उपलब्ध करवा रखी है। जो दर्शनार्थी आभूषण-जेवरात ठाकुरजी को धारण करवाना चाहते हैं वे धारण कराने की तारीख से 2 दिन पहले मंदिर कार्यालय में सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक जमा करा सकेंगे। धारण कराने के बाद आभूषण वापस कर दिए जाएंगे उन्हें मंदिर श्रीजी में जमा नहीं किया जाएगा।

पहले भी कर चुका है हठधर्मिता : मंदिर प्रशासन इससे पहले भी मनमानी कर चुका है। मंदिर में लम्बे समय से ठाकुरजी को फूलमाला धारण कराई जाती थी। श्रद्धालु मंदिर के बाहर फूलमाला विक्रेता से माला खरीद कर ठाकुरजी को धारण करवाते थे। ये दुकानदार सिटी पैलेस के किराएदार हैं। मंदिर प्रशासन इन्हें बेदखल करने पर उतारू है। इसलिए फूलमाला चढ़ानी बंद कर दी। तर्क दिया गया कि मालाओं से ठाकुरजी की पोशाक खराब होती है।